



वेदसार शिव स्तवः शुद्ध पाठ, सरल हिंदी भावार्थ

वेदसारशिवस्तवः पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृतिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥१॥

मैं उस भगवान का ध्यान करता हूँ जो समस्त जीवों के स्वामी (पशुपति) हैं, जो हमारे पापों का नाश करते हैं और जो परम दिव्य स्वरूप हैं।
वे श्रेष्ठ गजचर्म (हाथी की खाल) धारण करते हैं और स्वयं ही सर्वोच्च हैं।
उनकी जटाओं से पवित्र गंगा का जल प्रवाहित होता है।
मैं उसी महादेव का एकाग्र मन से ध्यान करता हूँ, जो स्मर (कामदेव, अर्थात् इच्छाओं) के शत्रु हैं।

महेशं सुरेशं सुरारतिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम् ।
विरूपाक्षमिन्दुवर्कं वह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥२॥

मैं उस भगवान का ध्यान करता हूँ जो कैलाश पर्वत के स्वामी (गिरीश) हैं, जो दिव्य गणों के अधिपति हैं और जिनका कंठ विषपान के कारण नीलवर्ण है।
वे नंदी, बैलों के राजा, पर आरूढ़ हैं और उनके अनगिनत रूप हैं।
वे भीतर से शुद्ध चेतना के रूप में प्रकाशमान हैं और बाहर से जिनका शरीर पवित्र भस्म से अलंकृत है।
वे देवी भवानी के पति हैं—ऐसे पंचमुखी भगवान की मैं पूजा करता हूँ।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥३॥

हे शिव! आप कैलाश के स्वामी हैं, गणों के अधिपति और नीलकंठ हैं।
आप धर्मरूप वृषभ (बैल) पर विराजमान होते हैं और अनंत गुणों से युक्त हैं।
आप समस्त सृष्टि के आदि कारण और प्रकाश के समान दिव्य स्वरूप हैं।
आपका शरीर पवित्र भस्म से अलंकृत है और आप माता भवानी के पति हैं।
ऐसे पंचमुखी प्रभु की मैं भक्तिभाव से उपासना करता हूँ।

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥४॥

हे शिवाकांत, पार्वती के मन को मोहित करने वाले!
हे शंभु, हे चन्द्रशेखर, हे महादेव!

आप त्रिशूल धारण करने वाले और जटाओं से विभूषित हैं।
हे विश्वरूप! आप ही सम्पूर्ण जगत में सर्वव्याप्त हैं।
हे पूर्णस्वरूप प्रभु! आप मुझ पर कृपा करें, प्रसन्न हों, प्रसन्न हों।

परात्मानमेकं जगद्वीजमाद्यं निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम् ।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥५॥

हे एकमात्र परमात्मा, समस्त जगत के आदि कारण!
आप इच्छाओं से परे, निराकार और ओङ्कारस्वरूप हैं।
आपका साक्षात्कार केवल प्राण और ध्यान के माध्यम से ही संभव है।
आपसे ही इस समस्त सृष्टि की उत्पत्ति होती है, आप ही उसका पालन करते हैं और अंततः सब कुछ
आपमें ही विलीन हो जाता है।
हे प्रभु! मैं आपकी भक्ति करता हूँ।

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर् न चाकाश आस्ते न तन्द्रा न निद्रा ।
न ग्रीष्मो न शीतो न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्ति तमीडे ॥६॥

जो न भूमि हैं, न जल, न अग्नि, न वायु और न ही आकाश—अर्थात् जो पंचतत्त्वों से परे हैं।
जो तन्द्रा, निद्रा, ग्रीष्म और शीत जैसे सभी द्वंद्वों से रहित हैं।
जो देश, काल और वेश की सीमाओं से भी परे हैं।
हे निराकार त्रिमूर्ति! मैं आपकी स्तुति करता हूँ।

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वाैतहीनम् ॥७॥

हे अजन्मा, अनादि और शाश्वत प्रभु! आप नित्य हैं और समस्त कारणों के भी कारण हैं।
हे कल्याणमूर्ति शिव! आप ही वह परम प्रकाश हैं, जो स्वयं प्रकाशमानों को भी प्रकाश प्रदान करते हैं।

आप जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति—इन तीनों अवस्थाओं से परे हैं।
हे अनादि और अनंत प्रभु! आप अज्ञान से सर्वथा रहित हैं।
आपके उस परम पवित्र अद्वाैत स्वरूप को मेरा नमस्कार है।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥८॥

हे विभु, हे विश्वरूप प्रभु! आपको बार-बार नमस्कार है।
हे समस्त प्राणियों को आनंद देने वाले सदानंद! आपको बार-बार नमस्कार है।
हे तप, योग और ज्ञान के द्वारा प्राप्त होने वाले प्रभु! आपको बार-बार नमस्कार है।
हे वेदों के ज्ञान से जानने योग्य परमेश्वर! आपको बार-बार नमस्कार है।

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र ।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥९॥

हे त्रिशूलधारी, हे विभु विश्वनाथ!
हे महादेव, हे शंभो, हे महेश!
हे त्रिनेत्र, हे पार्वतीवल्लभ, हे शांत और स्मरणीय प्रभु!

हे त्रिपुरारी! आपके समक्ष न कोई श्रेष्ठ है, न कोई वरण करने योग्य;
न कोई मान्य है और न ही कोई आपके समान गणनीय है।

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस् _ त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥१०॥

हे शंभो, हे महेश, हे करुणामय प्रभु!
हे शूलपाणि, हे गौरीपति, हे पशुपति, हे काशीपति!
आप ही समस्त पशुपाश अर्थात् मोह-माया के बंधनों का नाश करने वाले हैं।
हे दयामय प्रभु! आप ही इस जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार के कारण हैं,
और आप ही इसके एकमात्र स्वामी हैं।

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन् ॥११॥

हे चराचर विश्वरूप प्रभु! आपके लिंगस्वरूप से ही यह सम्पूर्ण जगत उत्पन्न होकर अस्तित्व में
आता है।

हे शंकर, हे विश्वनाथ! उत्पन्न होने के पश्चात् यह सारा जगत आपमें ही स्थित रहता है, अर्थात्
आप ही इसका पालन करते हैं।
और अंततः यह सम्पूर्ण सृष्टि आपमें ही विलीन हो जाती है।